BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - षष्ठ
व्याख्या - II

प्रो० सजीव कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

सप्रसंग व्याख्या (पत्रहीन नग्न गाछ):-

3. "नवतुरिया आबओ आगाँ
उमंग करत स्वागतम, आगू मुँह बढ़त उमंग
हमरा लोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोने।"

प्रस्तुत पद्यांश वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' रचित प्रो
'पत्रहीन नग्न गाछ' कैं 'नवतुरिया आबओ आगाँ'।

श्रीर्षक कवितासँ लेल गेल अछि। यात्री जी नवतुरियाक कार्य
देखिकऽ सहमत अछि। किन्तु तऽ घीसल-पीटल परिपाटीक
सहजे विरोधी छथि। हमरा समाजमे कतेको एहन कुप्रथा छल
वा एखनो अछि तकर विरोध आवश्यक अछि। कुप्रथाक
कारण हमर समाजक बहुतो लोकक, पारिवारिक जीवन
नरक बनि गेल अछि वा बनि रहल अछि तेँ यात्री जी
आधुनिक समाजमे स्थापित हेतु नवतुरिये आगाँ
होथु। ओ एहि आँगन करथि, समाजकेँ नव दिशा
देबामे बेस सक्षम छथि।

४. "शान्त शान्त शान्त सुशोभित धरणी
रविजा भारत, त्रिभुवन मनहरणी।"

प्रस्तुत पद्यांश वैद्यनाथमिश्र 'यात्री' रचित 'पत्रहीन नग्न गाछ' पोथीमे संगृहित 'जय भारती जननी' शीर्षक कवितासँ लेल गेल अछि।

कवि भारत माताक जय-जयकार करैत कहैत छथि। ई भारत माता सहस्रो सांस्कृतिक लोक आँचरमे सुखपूर्वक रहि रहल अछि। देशक कण-कणमे शतशत अनेकानेक गन्ध सुगन्धसँ परिपूर्ण अछि। देशमे कतेको जाति-धर्मक लोक एक सूत्रमे, एक मालामे रंग-बिरंगक फूल सदृश शोभित विश्व बन्धुत्वक भावना भरल रहि रहल अछि। एकटा नदी अमृतमय निर्मल जलसँ परिपूरित हिम शिखर सँ देश भरि विहार करैत सतत प्रवाहित भऽ रहल अछि।
रंग-बिरंगक वनस्पति ओ तृणसँ आदि

Page No.
Date

जननी आच्छादित अछि। ओ मनोरम दृश्य भारत धरणीक स्वर्गों सँ अनुपम लगैछ। भारत भूमिक गोदमे नाना तरहक खनिज सँ भरल हमर मातृभूमि भारत देशक अनुपम सुषमा कें देखि सभ लोकक मन लालायित रहैत अछि। संसार भरिमे भारत सँ सुन्दर देश कोनो नहि अछि। एहि आकर्षणक कारणे विदेशीयो सभ समय आबि अपन नयनकें जुड़बैत अछि। हे भारत माता अहाँक सौन्दर्य ओ गरिमा सँ देवगण स्वर्ग सँ समय आबि बास करैत छथि। जयहो, भारत जननीक जय हो।

5. "कतए नुकओने छह अपन ओ नवल अमृतघट
कतए नुकओने छह ओ प्राकृतिक संजीवनी रसायन"
बुद्धनाथ मिश्र जी द्वारा रचित 'प्राचीन नव गाछ' पोथीमे संकलित "हे निरभ्र आकाश" शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि। कवि कहि रहल अछि जे आकाश एकदम साफ स्वच्छ अछि। कतहु मेघक नामो निशान नहि, धरती तृषित अछि। सम्पूर्ण प्राकृतिक वन-उपवन सुखैल-टटुल अछि। कोना जुड़तइ पृथ्वीक छाती, हजार हजार वर्ष नगाड़ा बाजल घास-फूस विहीन धरतीक प्यास मेटत एकरा ई आकाश अहीं नुकओने प्राकृतिक संजीवनीक रस प्रदान। अमृत जल जे आब नहि देब त हमसब करैत जायब आत्मदाह। हमरा सभक चिन्ता धुक धुक दैत अहाँके तेना-तबाह।

Sanjit Kumar